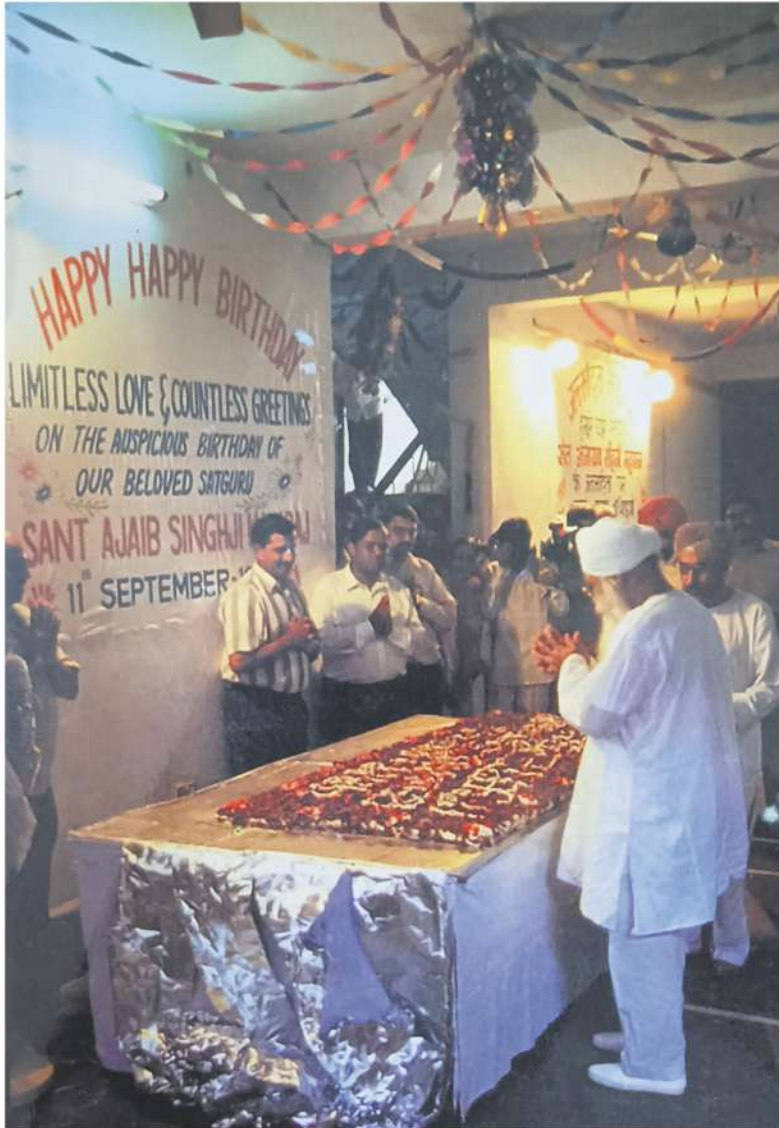


दया और प्रेम के गौरवमयी 100 साल

अजायब बानी

मासिक पत्रिका

सितम्बर-2026



Happy Birthday Babaji

मासिक पत्रिका
अजायब बानी

वर्ष-चौबीसवां

अंक-पांचवां

सितम्बर-2026

**आ सजणा चल****2****जन्मदिन की बधाई****3****दिवाली****5****परमात्मा एक रोशनी है****25****किड्स कॉर्नर-पवित्रता का महत्व****30**

प्रकाशक : सन्तबानी आश्रम 16 पी.एस. रायसिंह नगर-335 039 जिला-श्री गंगानगर (राजस्थान)

विशेष सलाहकार : गुरमेल सिंह नौरिया 96 67 23 33 04, 99 28 92 53 04

संपादक : प्रेम प्रकाश छाबड़ा 99 50 55 66 71 उप संपादक : नन्दनी

e-mail : dhanajaiibs@gmail.com

294

Website : www.ajaibbani.org

RSG-01, V.I.P. Colony, Ridhi-Sidhi Enclave Ist, Sri Ganganagar - 335 001 (Rajasthan)

आ सजणा चल

आ सजणा चल, शगन मनाईऐ, x2
रलके मनाईऐ सारे, हसिऐ ते गाईऐ, आ सजणा

1. जन्म दिहाड़ा, अजायब सोहणे सजण दा,
भागां नाल आया दिन, साडे हसण दा, x2
खुशियां च सारे कैहंदे, जश्न मनाईऐ, आ सजणा

2. जन्म दिहाड़ा तेरे, नाल सोहणा लगदा,
देखो नीं सईयो मेरा, सोहणा गुरु फब्बदा, x2
सारे रल मिल अज, खुशियां मनाईऐ, आ सजणा

3. सामने तूं बैठा प्यारे, बहुत सोहणा लगदा,
तेरे बगैर जीणा, चंगा नहियों लगदा, x2
सारे असीं चाहिए दिन, ऐदां ही मनाईऐ, आ सजणा

4. गुरु कृपाल बड़ा, खुश अज लगदा,
माता-पिता नूं दिन, शोभा दिंदा लगदा, x2
वंडदा रहे दया कोई, बाकी न बचाईऐ, आ सजणा

5. अजायब 'गुरमेल' ऐस, लायक तां नी लगदा,
जीव निमाणा वस, ओहदे वी नी लगदा, x2
मन सजणा ओहदी, जिंदगी बणाईऐ, आ सजणा



जन्मदिन की बधाई

आज हम अपने प्यारे सतगुरु परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज का 100 वां पवित्र जन्मदिन मना रहे हैं।

धन्य था वह पवित्र दिन 11 सितम्बर 1926 जब परमात्मा रूप अजायब सिंह जी महाराज हम तपती हुई आत्माओं को ठंडक देने के लिए इस संसार में आए।

सन्त हम जीवों पर उपकार करने के लिए, हमें धुरधाम पहुँचाने के लिए मालिक के हुक्म से इस संसार में आते हैं। हमारे बाबा जी अपने गुरु की आज्ञा के अनुसार इंसानी चोला धारण कर इस संसार में आए और हमें सतसंगों द्वारा समझाने की कोशिश की ताकि हम जाग जाएं और अपने निज घर पहुँच जाएं।

बाबा जी, आज हम इस खुशी के मौके पर आपके चरणों में विनती करते हैं, वैसे हम विनती करने के भी काबिल नहीं हैं क्योंकि हम पापों और ऐबों से भरे हुए हैं। जब आपके सिवाय हमारा कोई है ही नहीं तो हम किसके आगे विनती करें? आपकी दया-मेहर में कोई कमी नहीं, आप सच्चखंड से 'शब्द-रूप' में हमारे ऊपर पूरी दया-मेहर कर रहे हैं।

प्यारे बाबा जी, आपके चरणों में विनती है कि आप हमारे ऊपर अपनी दया रखें। आप हमें शारीरिक रूप से दर्शन दें और हमें जोरावर काल से बचाकर रखें। आप हमारी रक्षा करें और अपना प्यार देते हुए अपने चरणों में लगाए रखें। दया करें, दया करें।





परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज

उस परमात्मा शब्द रूप सावन-कृपाल के चरणों में करोड़ों बार नमस्कार है। गुरु साहब ने अपने गुरुदेव के आगे अरदास की:

फिरत-फिरत प्रभ आइआ परिआ तउ सरनाइ।

नानक की प्रभ बेनती अपनी भगती लाइ॥

आमतौर पर हमारे दिल में यह ख्याल होता है कि भक्ति करना कौन सा मुश्किल है, जब दिल करेगा भक्ति की तरफ लग जाएंगे लेकिन जिन महात्माओं की आँखें खुल जाती हैं उन्हें पता है कि जिस परमात्मा ने इस संसार की रचना पैदा की है, उसने इस संसार को लावारिस नहीं छोड़ा, उसने अपने नियम बनाए हैं। जिस तरह चन्द्रमा का निकलना, सूरज का निकलना, हवा का चलना, आंधी का आना और वक्त आने पर मौत-पैदाईश सब कुछ ही होता है।

गुरु नानक देव जी महाराज कहते हैं, “न हम अपनी मर्जी से जी सकते हैं और न ही अपनी मर्जी से मर सकते हैं, यह भी उसने पहले से ही तय किया हुआ है।” हम रोज यह सब अपनी आँखों से देखते हैं और ये हमारे साथ गुजरती भी हैं लेकिन सन्तों के तजुर्बे में यह आया है कि अगर परमात्मा की अति कृपा होती है तभी हम भक्ति की तरफ आ सकते हैं, यह कानून भी परमात्मा ने अपने हाथ में रखा हुआ है कि वे जिसे चाहें भक्ति से दूर करें, जिसे चाहें अपनी भक्ति में लगाएं।

आमतौर पर हम कोई भी काम शुरू करने से पहले अच्छा मुहूर्त देखते हैं, हमने जो काम शुरू करना होता है उसके मुताबिक शगन भी करते हैं और विचार भी करते हैं। सन्त-महात्मा हमें प्यार से कहते हैं कि सबसे

अच्छा मुहूर्त वह समय है जब हमारा मिलाप मालिक के प्यारों से हो जाता है और उससे अच्छा समय वह है जब मालिक के प्यारे हमें 'शब्द-नाम' के साथ जोड़ देते हैं। वह समय उससे भी अच्छा होता है जब हम उस समय का उपयोग शब्द-नाम की कमाई में करते हैं।

सन्त-सतगुरु हमें 'शब्द-नाम' की कमाई करने का उपदेश देते हैं। जब हम 'शब्द-नाम' की कमाई करने लग जाते हैं तब हम उनके हुक्म के अंदर रहना शुरू कर देते हैं। सन्त-महात्मा बताते हैं कि हमें कथनी के सूरमें जगह-जगह मिल जाएंगे क्योंकि हर आदमी यही सोचता है कि मैं कथनी करके दो-चार आदमियों में या अपने अंदर वैराग्य पैदा कर लूंगा।

आमतौर पर हम देखते हैं कि जो लोग राग या अच्छी कथा करते हैं वे लोगों को रिझाने के लिए खुद रोने लग जाते हैं और दूसरों को भी रुला देते हैं। दिल में ख्याल आता है शायद! ये बहुत वैरागी हैं ये परमात्मा से मिले होंगे लेकिन सन्तमत में ऐसे वैरागियों की कोई अहमियत नहीं। गुरु नानक साहब कहते हैं:

गली किने न पाइआ, न भीजे रागी नादी बेदि।

आप कहते हैं कि चाहे कोई कितने भी राग गा ले चाहे कितने भी ऊँचे सुर निकाल ले, परमात्मा इन कर्मों से कभी नहीं रीझते। हमें पता है कि अगर हमने खेती करनी है तो खेती भी मेहनत मांगती है, बिना मेहनत के व्यापार भी नहीं होता। दुनिया का कोई भी कारोबार करना हो तो हमें उस काम के नियमों का पालन करना पड़ता है। सोना खान में से खोदकर निकाला जाता है, मोती निकालने के लिए गहरे समुंद्र में डुबकी लगानी पड़ती है।

जब 'शब्द-नाम' की कमाई का वक्त आता है तो हम कहते हैं कि अभी सतगुरु की दया नहीं, अभी हमारा समय नहीं आया। अच्छा भाई, मालिक कृपा करेंगे। क्या हमने कभी ख्याल किया कि जब दुनिया का कोई भी कारोबार बिना मेहनत और मशक्कत के नहीं होता तो क्या हम

परमात्मा की भक्ति सोते हुए या बातें करते हुए कर सकते हैं? भक्ति भी मेहनत और मशक्कत मांगती है बल्कि दूसरे कारोबार से यह ज्यादा मेहनत मांगती है। दुनिया के कारोबार में हमारा मन लगा ही हुआ है, चौबीस घंटे हमारा झुकाव उसी तरफ है लेकिन मन को दुनिया की तरफ से पलटने के लिए काफी संघर्ष करना पड़ता है।

मैं आप बीती बताया करता हूँ कि तोप के आगे खड़े होना तो आसान है क्योंकि लोग हमारी वाह-वाह करते हैं कि यह बहुत हौंसले वाला है लेकिन नाम की कमाई करना बहुत मुश्किल है। जब हम अभ्यास पर बैठते हैं तो मन शेर बनकर खड़ा हो जाता है कि मैंने तुझे अभ्यास पर नहीं बैठने देना। आप उन लोगों से पूछकर देखें जिन्होंने संघर्ष किया होता है।

जब दूसरी वर्ल्ड वार लगी हुई थी, उस समय मेरी उम्र ज्यादा नहीं थी। मुझे ब्वायज कंपनी में भर्ती किया गया था। ब्वायज कंपनी वालों की लड़ाई में जाने की टर्न नहीं होती। मेरे दिल में देश सेवा के लिए शौक, प्यार और बहुत जज्बा था। मैंने खुशी से लड़ाई में जाने के लिए अपना नाम दे दिया।

उन दिनों महाराज सावन सिंह जी से सुना था कि देश सेवा बहुत अच्छी है अगर कोई देश सेवा करते हुए मर जाए तो वह स्वर्ग में जाता है। उस समय हम स्वर्गों को बहुत ऊँचा समझते थे। जब मैंने लड़ाई में जाने के लिए अपना नाम दिया तब छोटी उम्र होने की वजह से हर कोई मुझे पैरों से लेकर सिर तक देखता था कि यह छोटी सी उम्र का बालक कितना दिलेर है, इसने लड़ाई में जाने के लिए अपना नाम क्यों दिया है?

उस समय लोगों का मनोबल बहुत गिरा हुआ था। जब हमारी डाक्टरी जाँच की गई तो डाक्टर ने हमारे कमांडर से कहा, “आप सिफारिश करें मैं किस-किसका दूध लगवाऊं?” हमारे कमांडर ने आँखों में पानी भरकर कहा, “सारे ही बलि के बकरे हैं, तू सबका ही दूध लगा दे।” मुझे याद है कि हम नाभा की जेल से कैदियों को लेने के लिए गए कि जिन्होंने आर्मी

में जाना है वे आ जाएं। उन लोगों ने बीस-बीस साल जेल में रहना मंजूर किया लेकिन आर्मी में आना मंजूर नहीं किया। उस समय हिटलर बहुत जोरों पर था। वह कहता था कि मैंने कल उस जगह चाय पीनी है, अगले दिन वह वहीं पहुँच जाता था। आप देखें कि दुश्मन पर फतह करने के लिए कितने खून होते हैं, कितना कत्लेआम होता है।

जिस समय महाराज कृपाल ने मुझे आँखे बंद करके इस जगह गुफा में बिठाया और कहा, “प्यारे बेटा, मैं खुद ही तेरे पास आऊंगा।” उस समय मन शेर की तरह आकर खड़ा हो जाता था। महाराज सावन सिंह जी कहा करते थे, “मन तोप के आगे खड़ा हो जाता है लेकिन भजन के लिए कभी तैयार नहीं होता।”

हम मेहनत के चोर हैं, बहाने-बाजी करते हैं कि अभी समय नहीं आया, सतगुरु की दया नहीं हुई। सतगुरु इससे ज्यादा क्या दया करेंगे? वे अपना देश छोड़ते हैं, भेष छोड़ते हैं और आत्मा को लेने के लिए इंसानी चोला पहनकर सदा ही संसार में आते हैं। उन्होंने हमें मुफ्त में ‘शब्द-नाम’ का भेद दिया फिर वे यह भी नहीं कहते कि आप अकेले जाएं। वे कहते हैं, “बेटा, हौंसला करें सिमरन करके मेरे पास पहुँचें।”

स्कूल में जाना बच्चे की ड्यूटी है आगे टीचर पढ़ाएगा। हमारा स्कूल इन दोनों आँखों के दरमियान है, हमारे मन और आत्मा की गाँठ तीसरे तिल पर बंधी हुई है। हम स्कूल में तो जाते नहीं, ऐसे ही बैठे हुए शिकायतें करते हैं कि अभी दया नहीं हुई, समय नहीं आया; यह सिर्फ हमारा आलस और हमारे मन का बहाना है।

सन्त-महात्मा प्यार से कहते हैं कि सबसे ऊँचा और सुच्चा दिन वह है जब हमारा मिलाप मालिक के प्यारों से हो जाता है। गुरु अर्जुनदेव जी महाराज कहते हैं:

जा दिन भटे साध मोहि, उहा दिन बलिहारी।

मैं उस दिन पर बलिहार जाता हूँ, कुर्बान जाता हूँ जिस दिन मेरा मिलाप किसी मालिक के प्यारे के साथ हुआ। आपके आगे गुरु रामदास जी महाराज का शब्द रखा जा रहा है, गौर से सुनने वाला है। गुरु रामदास जी महाराज कहते हैं कि हमारे मन और आत्मा की सीट दोनों आँखों के दरमियान है। यहाँ से हमारा मन सेकंड-सेकंड बाहर दुनिया की तरफ जाता है। जब हमारा मन ही तीसरे तिल पर आकर नहीं ठहरता तो हम अंदर किस तरह तरक्की कर सकते हैं?

सन्त-महात्मा हमें प्यार से बताते हैं कि हमने बाहर जाते हुए मन को किस तरह मोड़ना है, किस तरह मन और आत्मा की बंधी हुई गाँठ को खोलना है। पहले हमारी आत्मा पवित्र थी, जब मन ने कर्म नहीं किए थे उस समय इसके ऊपर कोई गंदगी नहीं चढ़ी हुई थी। जैसे-जैसे आत्मा और मन संसार में विचरते गए, इनके ऊपर कर्मों का बोझ चढ़ता गया। अब मन अपने घर को भूल गया है और आत्मा अपने घर को भूल गई है।

सन्त-महात्मा संसार में कोई नया रास्ता लेकर नहीं आते और न ही कोई मजहब बनाने के लिए आते हैं। वे हमारे मन और आत्मा को उसकी भूली हुई जगह पहुँचाने के लिए आते हैं।

प्यारे बच्चो, यह आपका घर नहीं और यह आपकी कौम नहीं। पता नहीं ये बच्चे पहले कितने जामों में आपके बच्चे बन चुके हैं। पशु-पक्षी के जामें में भी बच्चे होते हैं। हम योनि के मुताबिक भोग भोगते हैं, अच्छे-बुरे खाने खाते हैं। ऐसे भी कुत्ते हैं जो अच्छे महलों में रहते हैं, अच्छे खाने खाते हैं और ऐसे भी कुत्ते हैं जिन्हें गलियों में गंदगी खाने को भी नहीं मिलती।

इसी तरह ऐसे भी इंसान हैं जो अच्छे-अच्छे महलों में रहते हैं, अच्छे खाने खाते हैं और ऐसे भी इंसान हैं जो सड़कों पर रुलते-फिरते हैं, न उनके पास पहनने के लिए कपड़े हैं, न उन्हें नहाने का समय मिलता है और न ही पेट भर खाने को मिलता है। ऐशो-ईश्रतें और सुख-दुख हम

हर जामे में भोगते आए हैं। इंसान के जामे का फर्क सिर्फ यही है कि हम इंसान के जामे में ही परमात्मा की भक्ति कर सकते हैं।

महात्मा बताते हैं कि हमारे मन और आत्मा की गाँठ बंधी हुई है। जब तक हम इस गाँठ को नहीं खोलते, आत्मा को इसके पंजे से आजाद नहीं करते तब तक हमारी आत्मा अपने घर वापिस नहीं जा सकती। हमने मन की गाँठ को कैसे खोलना है? अपने फैले हुए ख्याल को सिमरन के जरिए आँखों के पीछे लाना है।

महात्माओं ने अपनी अलग-अलग भाषाओं में इसके कई नाम रखे हुए हैं। किसी महात्मा ने इसे तीसरा तिल, किसी ने इसे घर-दर तो किसी महात्मा ने इसे मुक्ति का दरवाजा कहा है।

महाराज सावन सिंह जी कहा करते थे, “आप डंडे को चाहे लड्डु कह लें या डंडा कह लें।” सवाल तो फैले हुए ख्याल को आँखों के पीछे लाना है। आपने अपने ख्याल को तीसरे तिल पर रखकर बार-बार महात्मा के सिमरन को याद करना है। सिमरन करने पर कोई जोर नहीं लगता, कोई बोझ नहीं उठाना पड़ता। हम घर में काम करते हैं तो हमारा मन कल्पना करता ही रहता है। यहाँ जिस्म जरूर बैठा है लेकिन मन किसी न किसी कल्पना में लगा हुआ है। दफ्तर वाले फाइलों की कल्पना करते हैं, दुकानदारी का काम करने वाले ग्राहकों की कल्पना करते रहते हैं और जमींदार के मन में खेती-बाड़ी के कारोबार की कल्पना लगी रहती है।

महात्मा हमें प्यार से कहते हैं कि हम दिन-रात दुनिया के कारोबार की कल्पना करते हैं तो क्यों न हम सिमरन की कल्पना में लग जाएं! पहले हमें जुबान से सिमरन करना पड़ता है जिस तरह बच्चा स्कूल जाता है तो पहले-पहले वह जुबान से A B C कहता है, जब जुबान पक जाती है तो बोलने की जरूरत नहीं पड़ती।



शुरू-शुरू में जब हम आर्मी में गए तो उस समय हमें कदम याद करवाने के लिए लेफ्ट-राइट, लेफ्ट-राइट बुलवाते हैं, जब यह पक जाता है तो सिर्फ चलते ही जाते हैं। इसी तरह शुरू-शुरू में सिमरन हमारी जुबान पर नहीं चढ़ा होता तो हमें वह गिनती की तरह गिनना पड़ता है। जब सिमरन जुबान पर चढ़ जाता है तो हमें जुबान हिलाने की जरूरत नहीं पड़ती, याद करने की जरूरत नहीं पड़ती क्योंकि यह कल्पना की तरह चौबीस घंटे हमारे अंदर अपने आप ही चलता रहता है। जब सिमरन मन की जुबान पर चढ़ जाता है तब यही सिमरन आत्मा की जुबान पर चढ़ जाता है फिर चाहे समाधि की अवस्था में जाएं, सिमरन अपने आप ही बिजली की तार की तरह हिलता रहता है।

अगर हम थोड़ी बहुत हिम्मत करके चलते-फिरते, उठते-बैठते, दिन-रात मन की जुबान से सिमरन करें तो आत्मा की जुबान से सिमरन अपने आप ही होने लग जाता है। जब इस तरह का सिमरन बन जाता है तो हम जब भी अभ्यास पर बैठेंगे फौरन हमारा ख्याल तीसरे तिल पर आ जाएगा हमें टांगे अकड़ाने की जरूरत नहीं पड़ेगी। 'शब्द' की आवाज अपने आप ही आ जाएगी फिर हमें ढूँढ़ने की जरूरत नहीं पड़ती, यहाँ 'शब्द' चौबीस घंटे आ रहा है। मसला तो यह है कि 'शब्द' अभी भी वहाँ आ रहा है लेकिन हम उस जगह एकाग्र नहीं होते। हमारे अंदर सुरत और निरत दो शक्तियाँ हैं। सुरत सुनने वाली शक्ति और निरत देखने वाली शक्ति को कहते हैं। इसे गुरु साहब कहते हैं:

अंतरि जोति निरंतरि बाणी साचे साहिब सिउ लिव लाई॥

जब हम फैले हुए ख्याल को आँखों के पीछे लाते हैं तो निरत जोत के दर्शन करना शुरू करती है और सुरत आवाज को पकड़ती है। जब हम सारे पर्दे उतारकर दसवें द्वार में पहुँच जाते हैं वहाँ शब्द का नूर देखते हैं, सन्तों ने इसे ही 'दिवाली' करना कहा है। स्वामी जी महाराज कहते हैं:

सन्त दिवाली नित करे सतलोक के माहे।

जब ख्याल अंदर ले गए तो वही **दिवाली** है, वहाँ नूर और प्रकाश है। ऋषियों-मुनियों ने हमारे अंदर शौक पैदा करने के लिए बाहर की दिवाली को दीपक जलाकर बताया है। जब आप पहली मंजिल पर जाएंगे तो देखेंगे कि आपके अंदर हजारों पंखड़ियों का कमल जगमगा रहा है।

रामायण के अंदर राम को सतगुरु-परमात्मा, आत्मा को सीता और मन को रावण कहकर बयान किया गया है। जिस तरह सीता आत्मा की खातिर राम परमात्मा ने बहुत संघर्ष किया, कष्ट उठाए और सीता आत्मा को रावण मन की जेल से स्वतंत्र करवाया। इसी तरह गुरु परमात्मा भी हमारी आत्मा सीता को आजाद करने के लिए बहुत कष्ट झेलते हैं।

महाराज सावन सिंह जी कहा करते थे, “बाल्मिक ने दस हजार साल पहले ही रामायण लिख दी थी। राम, लक्ष्मण और सीता तो बाद में हुए हैं। अंदर सारा रामायण का खेल हो रहा है। काल ने सोचा कि जो लोग इस रामायण को पढ़ेंगे और इस पर अमल करेंगे, वे फौरन अंदर चले जाएंगे। रामायण में जो नाम वर्णन किए गए हैं, काल ने वही नाम बाहर रखकर खेल दिखा दिया। अब हमें समझाया जाए तो हम मानने के लिए तैयार नहीं होते।”

सन्त-महात्मा कहते हैं कि आप अपने फैले हुए ख्याल को आँखों के पीछे लाकर स्थूल, सूक्ष्म और कारन के तीनों पर्दे उतारकर त्रिकुटी में पहुँच जाएंगे। गुरु साहब कहते हैं:

गुरु परसादी त्रिकुटी छूटै चउथे पदि लिव लाई।

जब सन्त-सतगुरु हमारे ऊपर कृपा करते हैं, अपना नाम देते हैं तब हमारी लिव चौथे पद में लग जाती है, हम त्रिकुटी (ब्रह्म) से छुटकारा पा लेते हैं। जब हम ‘शब्द-नाम’ की कमाई करके इस जगह पहुँच जाते हैं तब मन त्रिकुटी में रह जाता है और आत्मा इसके पंजे से आजाद हो जाती है फिर रूह और मन की बंधी हुई गांठ खुल जाती है।



परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज

मन खिन खिन भरम भरम बहु धावै तिल घर नहीं वासा पाईऐ॥
गुर अंकस शबद दारु सिर धारयो घर मंदर आण वसाईऐ॥

अब गुरु साहब प्यार से बहुत अच्छी मिसाल देकर समझाते हैं कि हाथी बहुत ताकतवर जानवर होता है अगर वह खुला हो तो दुनिया में लोगों को वैसे ही रोंदता हुआ चला जाता है। जब वह मस्ती में आता है तो बहुत नुकसान करता है लेकिन महावत लोगों के पास बड़ी युक्ति होती है, उन्होंने लोहे के डंडे के आगे तीखी आर लगाई होती है फिर चाहे हाथी को स्कूल में ले जाएं, वह बच्चों के आगे आँख उठाकर भी नहीं देखता। लोग हाथी के ऊपर चढ़कर बाजारों में घूमते फिरते हैं, इतने ताकतवर जानवर को महावत लोग अंकुश के जरिए वश में करते हैं।

इसी तरह दुनिया ने मन को वश में करने के बहुत से उपाय किए हैं। मैंने अपनी जिंदगी में काफी कुछ किया है लेकिन इन कर्मकांडों को करने से हमारा मन वश में नहीं आता बल्कि मन के अंदर और अहंकार पैदा हो जाता है कि मैंने जलधारे किए, धूनियां तपाईं और नंगे पैर तीर्थ कर लिए हैं। यह सब करने के बाद मन नम्र होने की बजाय और ऊँचा हो जाता है।

अब आप प्यार से कहते हैं कि आपने मन को वश में करने के लिए सिमरन करके इसे त्रिकुटी में ले जाना है। त्रिकुटी में गुरु का शब्द अंकुश का काम करता है। जो मन हिरण की तरह विषय-विकारों और दुनिया के स्वादों में मस्त हुआ फिरता है, जल्दी से अभ्यास पर बैठने नहीं देता फिर यही मन सहायता करने लग जाता है, हमारा मित्र बन जाता है।

गुरु के शब्द की ताकत का उस समय पता चलता है जब हम अपने आपको उस शब्द के बीच जज्ब कर देते हैं। पहले हम सोचते हैं कि यह शब्द पढ़ने वाला या गाने-बजाने वाला है या हमें मामूली नाम ही बताए हुए हैं लेकिन इनके पीछे रहस्य छिपा हुआ है। ये पाँच पवित्र नाम उन पाँच विशाल धनियों के नाम हैं जिन्हें हमारी आत्मा ने पार करना होता है।



अगर हमने यहाँ से अमेरिका जाना है तो हमें पता होता है कि हमने रोम से होकर न्यूयार्क या बोस्टन जाना है और हमें किस जगह रुकना है। अगर हम पहले कभी उस रास्ते से गुजरे हों तो हमें किसी से पूछने की जरूरत नहीं पड़ती। जिस तरह माइल स्टोन पर लिखा होता है तो हम सड़के पर अपनी कार दौड़ाते जाते हैं। जो प्रेमी अंदर जाते हैं उन्हें पता है।

पश्चिम में और यहाँ भी बहुत से पढ़े-लिखे प्रेमी आते हैं। नामदान का वक्त बहुत पवित्र होता है। जब उन्हें नाम देते हैं तो वे उन अक्षरों का अर्थ पूछते हैं। हम उन्हें हँसकर कहते हैं, "जब तुम अंदर जाओगे तो तुम्हें अपने आप ही इनका अर्थ पता चल जाएगा।"

अगर कोई हमारे आगे खाना बनाकर रखे और हम उससे पूछें कि इस खाने का क्या मतलब है? समझदार आदमी यही कहेगा कि तू खाना खाकर देख, तुझे अपने आप ही पता चल जाएगा। अन्न के बिना चला नहीं जाता, खाने से ही ताकत आती है। हमारी आत्मा जन्म-जन्मांतर से कमजोर है, शब्द के अंदर ताकत है। जब हम अंदर जाएंगे तो मार्ग अपने आप ही किताब की तरह खुल जाएगा, वहाँ इनके अर्थों की जरूरत नहीं पड़ती।

आप कहते हैं कि वहाँ पहुँचकर पता चलता है कि गुरु का शब्द किस तरह अंकुश का काम करता है। फिर मन हाथी की फौज – काम, क्रोध, लोभ, मोह और अहंकार आँख उठाकर भी नहीं देखते क्योंकि ये अंकुश से डरते हैं फिर चाहे मन के आगे अच्छे-अच्छे खाने, विषय-विकार और ऐशो-ईश्रतों की चीजें रख दें, ये अंदर के रस के मुकाबले तुच्छ हैं और राख की तरह लगते हैं। समझदार आदमी को अमृत पीने को मिले तो क्या वह राख मुँह में डालेगा?

गोबिंद जीओ सतसंगत मेल हर ध्याईऐ॥

आप कहते हैं, "दिल में ख्याल आता है कि भक्ति करना कौन सा मुश्किल है? जगह-जगह महात्मा बैठे हैं, हम जब चाहेंगे भक्ति करने लग



जाएंगे लेकिन जिन पर परमात्मा मेहर करते हैं वही भक्ति की तरफ लग सकते हैं।” कबीर साहब कहते हैं:

में तो उन सन्तों का दास जिन्होंने मनुआ वस में करया।

ऐसे महात्मा दुनिया को छोड़कर भगवे कपड़े पहनकर बाहर नहीं फिरते, कान फड़वाकर शरीर पर राख नहीं लगाते। वे संसार में रहकर अपनी जीविका चलाते हैं चाहे खेती करें, चाहे व्यापार करें, वे दुनिया में उस मक्खी की तरह रहते हैं जो शहद के किनारे बैठकर शहद खा भी लेती है और उड़ भी जाती है।

महाराज सावन सिंह जी कहा करते थे, “एक मक्खी शहद के बीच में आकर बैठ जाती है वह उड़ नहीं सकती। टाँगे निकालती है तो पर फँस जाते हैं पर निकालती है तो टाँगे फँस जाती है। इसी तरह हम दुनियादार लोग दुनिया के कीचड़ में फँसे रहते हैं। न हम भक्ति कर सकते हैं और न दुनिया में ही पूरे आते हैं।”

हमारे घर में शादी हो, लड़का पैदा हो जाए तो हम फूले नहीं समाते, पार्टियां करते हैं अगर उसी घर में मौत हो जाती है तो हम रोना-पीटना शुरू कर देते हैं, सारी जिंदगी खुष्क हो जाती है। यह संसार मौत-पैदाईश का है। हम मौत के समय भी दुखी होते हैं और पैदाईश के समय भी दुखी होते हैं।

हे परमात्मा! आप हमें ऐसा वातावरण दें जिसमें हमारा भूला मन आपकी भक्ति की तरफ लग जाए। हमें संगत में जाने के लिए किसी खास किस्म के कपड़े नहीं पहनने पड़ते। मन के ऊपर सोहबत का बहुत असर होता है अगर हम जुएबाजों की सोहबत में जाएंगे तो जुआ खेलने की आदत पड़ जाएगी, शराबियों की सोहबत में जाएंगे तो शराब पीने की आदत पड़ जाएगी। अगर हम 'शब्द-नाम' की कमाई करने वालों के पास जाएंगे तो हमें 'शब्द-नाम' की कमाई करने की आदत पड़ जाएगी।

हौमें रोग गया सुख पाया हर सहज समाध लगाईऐ॥

संगत में जाने से हमारे अंदर से हौमे का रोग चला जाता है जब हम गरीब-अमीर एक दरी पर बैठकर इकट्ठे खाना खाते हैं, उस समय हमें अपने अंदर नम्रता लाने का मौका मिलता है कि सारे जीव परमात्मा ने बनाए हैं। हमारी आर्मी का बड़ा कमांडर जनरल थिमैया महाराज सावन सिंह जी से मिलने के लिए गया। लेफ्टिनेंट जनरल बिक्रम सिंह भी महाराज जी से मिलने के लिए जाया करते थे। मुझे जनरल बिक्रम सिंह के साथ जाने का ज्यादा से ज्यादा मौका मिलता रहा है। महाराज जी ने उनके लिए कुर्सी मंगवाई लेकिन उन्होंने नीचे दरी पर बैठकर खाना खाया और कहा, "किसी महात्मा के चरणों में बैठने का जिंदगी का यही मौका है।"

सच्चे पातशाह महाराज सावन सिंह जी फौजियों के साथ बहुत प्यार करते थे क्योंकि वे खुद आर्मी में रहे थे। वे जानते थे कि इन्हें बहुत थोड़ा टाइम मिलता है, ये समय के पाबंद होते हैं।

सन्त-महात्मा प्यार से कहते हैं, “प्यारे बच्चो, एक म्यान में दो तलवारे नहीं रह सकती। जहाँ हौमे-अहंकार है वहाँ कभी भी परमात्मा प्रकट नहीं होते, यह तो नम्रता का खेल है। पानी हमेशा नीची तरफ ही जाता है, पानी पहाड़ पर नहीं रुकता नीचे झरनों में बहता है।”

मैं बताया करता हूँ कि जब भक्त अपनी कमजोरी की तरफ और अपने पापों की तरफ देखता है तब वह अपने गुरु-परमात्मा के आगे सच्चे दिल से फरियाद करते हुए कहता है, “हो सकता है कि मुझे अपने कर्मों की वजह से बहुत लंबी और कठोर सजा भुगतनी पड़े क्योंकि मैं दुनिया से तो चोरी करता हूँ लेकिन परमात्मा देख रहे हैं। काम ने मेरी मत मार रखी है। हे परमात्मा गुरु, आप मेरा लेखा लेने से पहले ही मुझे बख्श दें अगर आप मुझसे लेखा मांगेंगे तो मैं पूरा नहीं आ सकता।” गुरु साहब कहते हैं:

लेखै कतहि न छूटीऐ खिनु खिनु भूलनहार।

बखसनहार बखसि लै नानक पारि उतार॥

हे प्रभु, मैं लेखा करके छूट ही नहीं सकता, पता नहीं कितने जन्मों के कर्म हैं। जब हम सन्तों के मुख से नम्रता भरे वचन सुनते हैं तो हमारे भूले हुए मन में भी नम्रता आनी शुरू हो जाती है। हम आमतौर पर सोचते हैं कि दरवाजा बंद करके जो मर्जी कर लें कौन सा परमात्मा देख रहे हैं। मैंने अपने आपको और परमात्मा को धोखा दिया क्योंकि मैं सोचता था कि दुनिया बड़ी है और परमात्मा छोटे हैं।

घर रतन लाल बहु माणक लादे मन भ्रमया लेह न सकाईऐ।

सन्त नाम को लाल या रतन कहते हैं। परमात्मा ने हर किसी के अंदर नाम के खजाने रखे हैं लेकिन भ्रम के वश होकर हमारा मन बाहर ही बाहर घूम रहा है। हम जो कुछ बाहर देखते हैं जैसे माता-पिता, बहन-भाई, जायदाद, धन-दौलत ये सब भ्रम है। आज हम जो बेटे-बेटियां या धन-दौलत लेकर बैठे हैं, ये पहले किसी और के पास थे। हमारे बड़े-बुजुर्गों

का इन जायदादों के साथ बहुत लगाव था, वे इन्हें साथ लेकर नहीं गए तो हम क्या आशा लगाए बैठे हैं? इसलिए हम जो कुछ देख रहे हैं यह भ्रम है।

परमात्मा ने हमारे अंदर नाम के खजाने रखे हैं, हमने उन्हें किस तरह प्राप्त करना है? सन्त-महात्माओं ने हमारे अंदर कुछ रगड़कर या घोलकर नहीं डालना। आज जो जज या वकील जैसे ऊँचे ओहदों पर हैं, उनसे पूछें कि क्या आपके उस्तादों ने आपके अंदर कुछ रगड़कर या घोलकर डाला था? वे हमें यही कहेंगे कि हमने अपने उस्तादों की सोहबत की और उनका कहना माना। जिन्होंने अपने टीचर का कहना नहीं माना, वे आज भी अनपढ़ घूम रहे हैं। विद्या की ताकत तो उनके अंदर भी है लेकिन वह सोती हुई आई और सोती हुई ही चली गई। भीखा साहब कहते हैं:

**भीखा भूखा को नहीं सबकी गठड़ी लाल।
गिरह खोल न जाणी तांतें भए कंगाल॥**

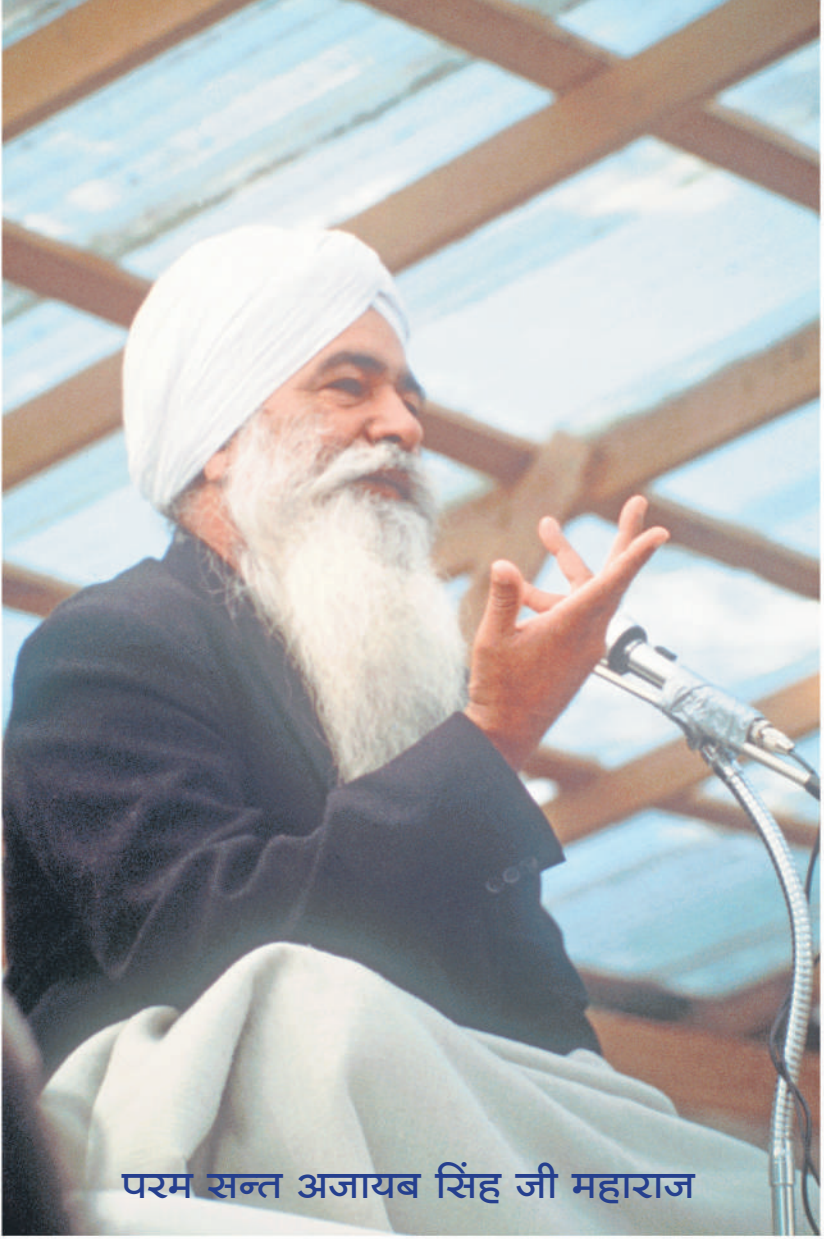
परमात्मा ने किसी के लिए कमी नहीं रखी, हर एक के अंदर नाम का खजाना रखा हुआ है लेकिन हम अंदर जाकर इसे प्राप्त नहीं करते इसलिए हम कंगाल हैं।

ज्यों ओडा कूप गुहज खिन काढै त्यों सतगुर वस्त लहाईऐ॥

जिन ऐसा सतगुर साध न पाया ते धृग धृग नर जीवाईऐ॥

जिस तरह पुरातन टीलों के नीचे बने बनाए कुएं आ जाते हैं। उस जगह की खुदाई करने से पता चलता है कि किसी समय इस जगह के नीचे बने बनाए मकान या शहर बसते थे। ओडा लोगों को यह इल्म होता है, उन लोगों को सींगे भी कहते हैं, वे अपने हुनर से सूंघकर बता देते हैं कि आप यहाँ से मिट्टी हटाएंगे तो यहाँ बना बनाया कुँआ निकल आएगा।

इसी तरह सन्त-महात्माओं को भी यह इल्म होता है, यह उनका व्यक्तिगत तजुर्बा है वे सुनी-सुनाई बातें नहीं कहते। वे कहते हैं कि अगर आप भी हमारे कहने के मुताबिक हिम्मत करके अपने फैले हुए ख्याल



परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज

को आँखों के पीछे लाकर 'शब्द' के साथ जोड़ेंगे तो आप भी इस खजाने को प्राप्त कर सकते हैं। आप प्यार से कहते हैं कि इंसानी जामा पाकर जिन्होंने जिंदगी का मसला हल नहीं किया, उनका दुनिया में आना लानत है।

जनम पदारथ पुंन फल पाया कौडी बदलै जाईऐ॥

जब हमारे बहुत से अच्छे कर्म जमा हो जाते हैं तो परमात्मा खुश होकर हमें इंसानी जामे का ईनाम देते हैं। परमात्मा कहते हैं, "तूने दुनिया के धंधे, मान-बड़ाई, विषय-विकारों से मोह लगाया हुआ है। तू इस जामे में मेरे साथ मिलाप कर ले।" परमात्मा ने हमें बहुत नेक कर्मों का ईनाम इंसान का जामा दिया है लेकिन हम भूले बैठे हैं और इसकी कीमत नहीं समझते।

ऐह जग मिट्ठा अगला किन डिट्ठा।

मधुसूदन हर धार प्रभ किरपा कर किरपा गुरु मिलाईऐ॥

हम दुनियादार लोग परमात्मा के आगे अरदास करते हैं। कोई धन-दौलत, कोई बेटे-बेटियां, कोई ऊँचे ओहदे तो कोई मान-बड़ाई मांगने में लगा हुआ है लेकिन जिनकी आँखे खुल जाती हैं वे कहते हैं, "हे परमात्मा, आप हम पर कृपा करके हमारा मिलाप गुरु से करवा दें।"

बचपन में जब मुझे इतनी सुरत भी नहीं थी। मैं जब कभी अकेला बाहर जाता तो यही सोचता था कि वे कैसे प्रेमी थे, कैसी आत्माएं थी जिन्होंने गुरु नानकदेव जी या गुरु गोबिंद सिंह जी के दर्शन किए। मैं सिक्ख परिवार में पैदा हुआ जहाँ आमतौर पर गुरुओं की चर्चा होती रहती थी। चलते-फिरते अकेले ही ख्याल आता कि वे कैसे भाग्यशाली प्रेमी थे जिन्हें पूरे गुरु के चरणों में बैठने का मौका मिला फिर यह भी सुनते थे कि कई आदमी गुरु से बेमुख हुए। फिर दिल में ख्याल आया कि उनके कैसे खोटे कर्म थे? बचपन से ही मेरे दिल में यह ख्याल आता कि क्या मुझे भी गुरु मिलेंगे, मैं भी गुरु के चरणों में बैठूंगा?

सच्चे पातशाह महाराज कृपाल कहा करते थे, “भूखे को रोटी प्यासे को पानी कुदरत का उसूल है, जरूर देती है।” अगर हम फुल्के के लिए पुकार करते हैं तो परमात्मा जरूर इंतजाम करते हैं अगर हम गुरु से मिलने के लिए पुकार करें तो वे हमारी पुकार जरूर सुनते हैं।

मैं बताया करता हूँ कि मुझे मेरी जिंदगी में न कोई उनकी बड़ाई करने वाला मिला और न कोई उनकी निन्दा करने वाला मिला। ये सब वही जानें कि वे पांच सौ किलोमीटर चलकर अपनी दया लेकर आए। मैं नहीं जानता था कि उन्हें मेरा नाम कैसे पता चला? उन्होंने अपने प्रेमी मेरे पास भेजे कि आज घर में ही रहें, मैंने आना है। मेरा दिमाग बचपन से ही गुरु के लिए था। मैंने उनसे कहा, “मेरा दिल-दिमाग खाली है, मुझे पता नहीं कि मैं आपके साथ क्या बात करूं?” महाराज जी ने कहा, “मेरे पास दिमागी कुशितियां करने वाले बहुत पहलवान हैं। मैं खाली जगह देखकर ही तुम्हारे पास आया हूँ।”

आप कहते हैं, “हे परमात्मा, आप कृपा करें। मेरा मिलाप ऐसे गुरु के साथ करवा दें जो दिल की जानते हैं।” लेकिन हम उन्हें नहीं मांग रहे होते अगर उन्हें ही मांगे तो वे खुद आ जाएंगे। हम दुनिया के खिलौनों की तरफ लगे हुए हैं।

जन नानक निरबाण पद पाया मिल साधु हर गुण गाईऐ॥

गुरु साहब ने हमें इस शब्द में बताया है कि हमारा मन किस तरह हिरण की तरह बाहर की तरफ जाता है, किस तरह इसे सिमरन के जरिए आँखों के पीछे लाना है, किस तरह गुरु के शब्द की कमाई करनी है, किस तरह इसे हौमे से बचाना है? इसका एक ही तरीका ‘शब्द-नाम’ की कमाई है।

आप प्यार से कहते हैं कि परमात्मा बहुत पुण्यों का इनाम इंसान का जामा देते हैं। जिन्हें इंसान का जामा पाकर ऐसे गुरु नहीं मिले उनका दुनिया में आने का मकसद पूरा नहीं होता। परमात्मा ने हर एक के अंदर

नाम का खजाना रखा है लेकिन ऐसे गुरुओं के चरणों में न जाने की वजह से हम उनसे नावाकिफ रह जाते हैं और उनसे फायदा नहीं उठा सकते। मैंने पहले भी बताया था:

गुरु परसादी त्रिकुटी छूटै चउथे पदि लिब लाई।

हमने गुरुओं की कृपा से त्रिकुटी से पीछा छुड़ाना है। जब हम उस जगह पहुँच जाते हैं तो हमारी आत्मा मन के पंजे से आजाद हो जाती है और इसकी गाँठ खुल जाती है तब हम दसवें द्वार में पहुँचकर शब्द का नूर और गुरु का नूर देखते हैं।

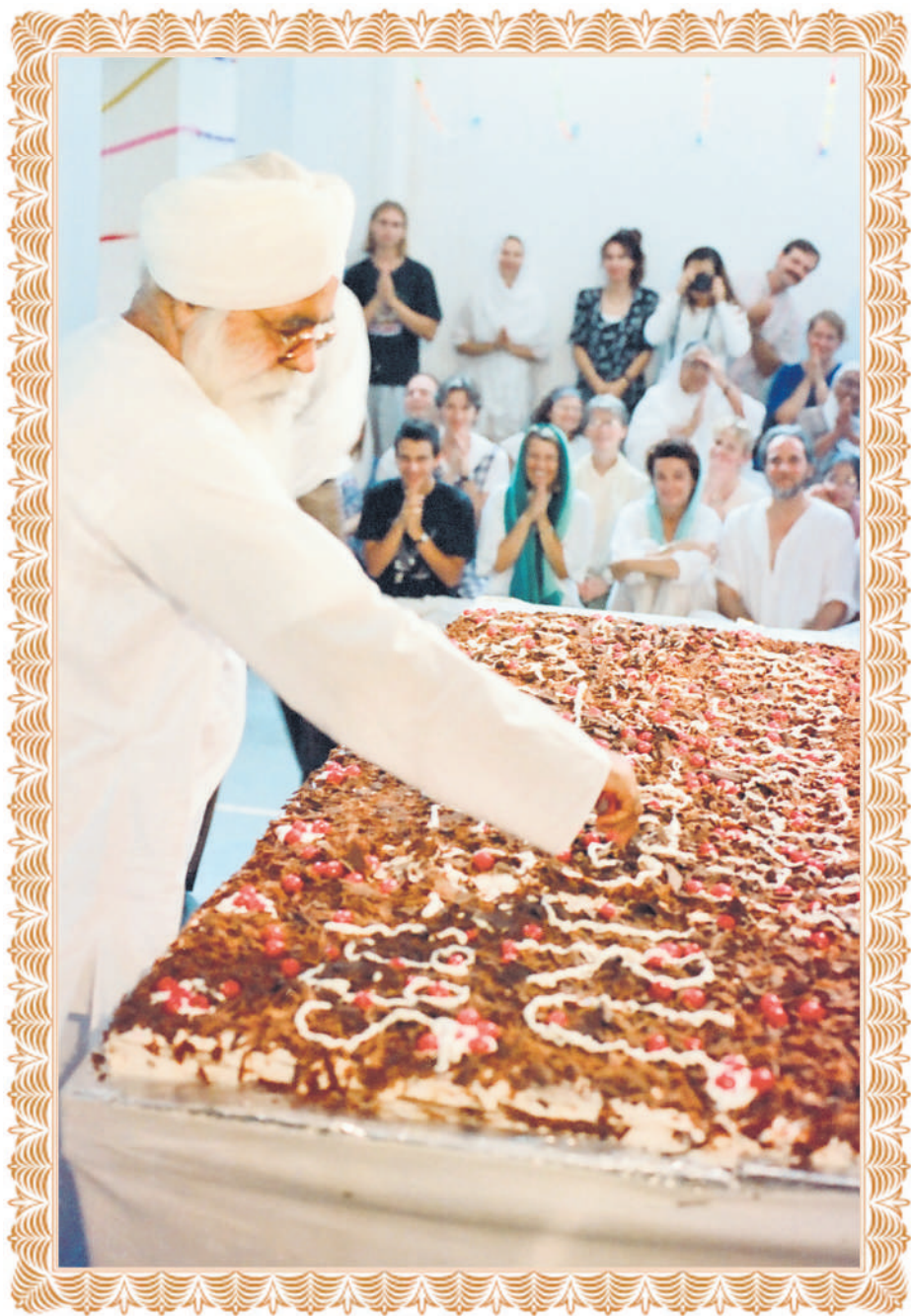
सन्त दिवाली नित करे सतलोक के माहे।

और मते सब काल के यू हीं धूल उड़ाए॥

स्वामी जी महाराज कहते हैं, “जो वहाँ पहुँचते हैं, वे नित्य दिवाली करते हैं। ऋषियों-मुनियों ने हमें समझाने के लिए बताया है कि जो दिवाली हम बाहर देखते हैं, इसके पीछे रुहानियत का बहुत रहस्य छिपा हुआ है।

आप कहते हैं कि निर्वाण पद वह है जहाँ जाकर हमारी सारी आशा-मंशा सुन्न हो जाती है। निर्वाणों का एक पंथ भी है। मैं यह नहीं कहता कि बेटे-बेटियाँ छोड़कर अपने घर की कमाई छोड़कर लोगों के आगे हाथ फैलाते फिरे। आत्मा से स्थूल, सूक्ष्म, कारन के तीनों पर्दे उतारकर ब्रह्म पारब्रह्म और उससे आगे दसवें द्वार में पहुँच गए, वहाँ हमारी लिब परमात्मा के साथ लग जाती है। जब हमारा ख्याल उस शब्द के साथ जुड़ जाता है, हमारे अंदर शब्द प्रकट हो जाता है फिर हमारा ख्याल दुनिया से निकलकर परमात्मा के साथ जुड़ जाता है। हमारी आत्मा उस जगह पहुँच जाती है जहाँ से वह आवाज वह शब्द आ रहा है।

गुरु रामदास जी महाराज ने इस शब्द में हमें प्यार से समझाया है कि ‘शब्द-नाम’ की कमाई करके अपने जीवन को पवित्र बनाएं। हमें जो मौका मिला है, इससे पूरा फायदा उठाएं। ***



परमात्मा एक रोशनी है

यादगार दास्तान

मैं बहुत दिशाओं में बहुत से लोगों के पास गया, मैंने बहुत कर्मकांड किए लेकिन मेरे मन को सन्तुष्टि नहीं मिली। हर जगह लोग सिर्फ परमात्मा की बातें करते और थ्योरी ही समझाते थे, जिससे मेरी प्यास और बढ़ गई लेकिन कोई मुझे तजुर्बा नहीं करवा सका।

अगर मुझे कहीं से कुछ मिल जाता तो मैं बाबा बिशनदास जी के पास नहीं पहुँच पाता। जब मैंने बाबा बिशनदास जी के चरणों में शीश झुकाया तो मुझे शान्ति मिली। उन्होंने मेरी जिंदगी बनाई और मेरे रास्ते की शुरुआत की।

मैं जब पहली बार बाबा बिशनदास जी के पास गया तो मैंने उनसे कहा, “मुझे परमात्मा दिखाएं?” उन्होंने मेरा मुँह सूरज की तरफ कर दिया और मुझसे कहा, “सूरज की तरफ लगातार देखते जाओ और मुझे बताओ कि कितनी देर लगातार सूरज की तरफ देख सकते हो?” मैं एक पल भी सूरज की तरफ नहीं देख सका और मैंने शर्मिन्दा होकर उनसे कहा, “मैं ज्यादा देर तक सूरज की तरफ नहीं देख सकता क्योंकि इसकी रोशनी बहुत तेज है।”

बाबा बिशनदास ने कहा, “परमात्मा एक रोशनी है। परमात्मा की रोशनी इस सूरज से हजारों गुना ज्यादा है। हम तो एक सूरज की रोशनी को भी ज्यादा देर तक नहीं देख सकते तो उस परमात्मा की रोशनी को कैसे देख सकेंगे? जब तक हम परमात्मा की रोशनी को देखने वाली आँख नहीं बना लेते तब तक हम गुरु को परमात्मा दिखाने के लिए किस तरह कह सकते हैं?”



बाबा बिशनदास ने मुझे बताया, “हमारी आत्मा का बाहर के रीति-रिवाजों से कोई सम्बंध नहीं होता। तीर्थ नहाने से मुक्ति मिलती होती तो पानी में रहने वाले मेंढक-मछलियों को मुक्ति मिल जाती। धुणियाँ तपाने से भी मुक्ति नहीं मिलती क्योंकि काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार की आग तो हमारे अंदर ही है।”

मैं जब पहली बार बाबा बिशनदास जी के पास पहुँचा उस समय मेरे साथ दो और प्रेमी थे। बाबा जी ने हमें खेती का काम करने के लिए कहा। मेरे साथ के दो प्रेमी किसान थे लेकिन मैंने इससे पहले कभी खेती का काम नहीं किया था। बाबा बिशनदास ने मुझसे जो कहा मैंने वही किया। मेरे साथ वाले प्रेमियों ने सोचा कि खेती का काम तो हमने बहुत बार किया है, अब यह करने का क्या फायदा? उन्होंने गुरु की आज्ञा का पालन नहीं किया।

शाम को बाबा बिशनदास जी यह देखने के लिए आए कि उन्होंने जो काम हमें दिया था, वह हमने ठीक से किया है या नहीं? मैंने बाबा बिशनदास जी से विनती करते हुए कहा, “मैंने घर पर खेती-बाड़ी का काम नहीं किया। आपके चरणों में आकर आपकी दया से मैं यह काम कर सका हूँ अगर इसमें कोई गलती हो तो मुझे माफ कर दें।”

उन दोनों प्रेमियों ने बाबा बिशनदास जी से कोई और काम माँगा कि वे खेती-बाड़ी का काम तो जन्म से कर ही रहे हैं, उनकी इस काम में कोई रुचि नहीं। बाबा बिशनदास जी उनसे खुश नहीं हुए और उन पर दया नहीं की। उन्होंने सिर्फ इस गरीब आत्मा पर ही दया की।

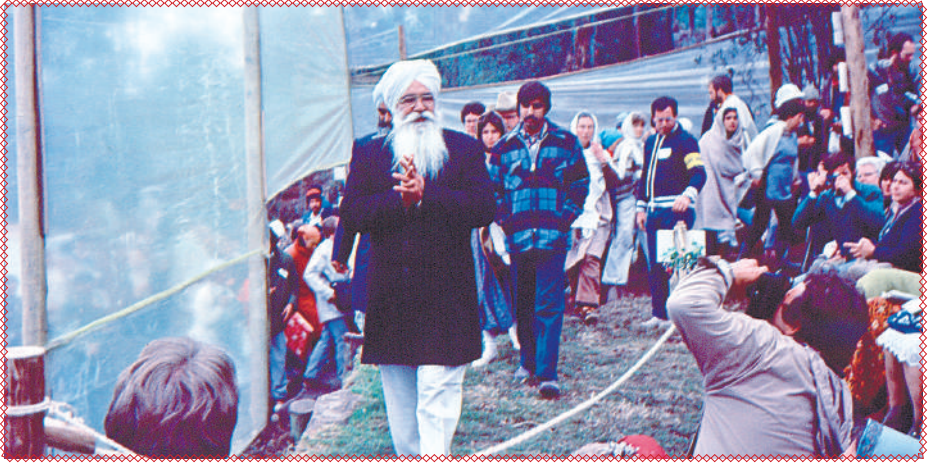
बाबा बिशनदास जी बहुत सख्त महात्मा थे। वे नाभा रियासत से ताल्लुक रखते थे। उनके घर में हर तरह की सहूलियतें थी, मैंने उनके महल और जायदाद भी देखी हैं। उन दिनों भारत पर राजा राज किया करते थे, नाभा का राजा हीरा सिंह उनको अपना उत्तराधिकारी बनाना चाहता था।

बाबा बिशनदास जी सांसारिक तौर पर बहुत पढ़े-लिखे थे। उस समय भारत में पढ़ाई करना बहुत मुश्किल था, उनको पढ़ने के लिए इंग्लैंड भेजा गया, उन्होंने इंग्लैंड से पी.एच.डी. की डिग्री प्राप्त की। उस समय भारत में पी.एच.डी. की डिग्री प्राप्त करना बहुत बड़ी चीज थी। जो इंग्लैंड से पी.एच.डी. की डिग्री प्राप्त करके आता लोग उसकी बहुत इज्जत करते थे, सरकार उसे कमीशनर का पद देती थी। बाबा बिशनदास जी कहा करते थे, “पढ़े-लिखे अपने साथ कुछ नहीं लेकर जाते, रुहानियत के रास्ते में अनपढ़ और पढ़े-लिखे में कोई फर्क नहीं।”

बाबा बिशनदास जी बहुत आरामदायक जीवन व्यतीत कर सकते थे लेकिन उन्होंने मुश्किल जीवन को चुना। उन्होंने अपने जीवन में परमात्मा की खोज के लिए हर तरह के कर्मकांड किए। जब वे बाबा अमोलकदास के पास पहुँचे तो उन्होंने उनसे कोई प्रश्न नहीं पूछा। उन्होंने बाबा अमोलकदास के सामने हाथ जोड़कर कहा, “गुरु जी! कृपया मुझे इस नर्क से निकाल कर मुक्त कर दें।” बाबा अमोलकदास अनपढ़ थे यहाँ तक कि वे अपने दस्तखत करना भी नहीं जानते थे।

जब बाबा बिशनदास जी अमोलकदास जी के पास पहुँचे तब बाबा अमोलकदास ने उन्हें बियाबान से कँटीली झाड़ियां लाकर ऐसी जगह बाड़ लगाने के लिए कहा जो जगह उनकी अपनी नहीं थी। उस जगह कुछ बोया नहीं जा सकता था, उसे सुरक्षा की जरूरत नहीं थी। बाबा बिशनदास जी डेढ़ महीने तक अमोलकदास जी के हुक्म के मुताबिक कँटीली झाड़ियों की बाड़ लगाते रहे। ऐसा करने के बाद ही बाबा अमोलकदास ने बिशनदास जी को ‘दो-शब्द’ का भेद दिया और भजन करना सिखाया।

बाबा अमोलकदास ने गुरु नानकदेव जी के बेटे श्रीचन्द से ‘दो-शब्द’ का भेद प्राप्त किया था। गुरु नानकदेव जी खुद भगवान थे, वे इस संसार में लोगों को ज्ञान देने के लिए आए थे। संसार में बहुत लोगों ने



उनसे फायदा भी उठाया लेकिन उनके दोनों बेटे श्रीचन्द और लक्ष्मीदास ने उनसे 'पाँच-शब्द' का भेद नहीं लिया। लक्ष्मीदास मीट खाता और हर तरह का बुरा काम करता था।

श्रीचन्द ने उदासी मत के अविनाशी मुनि से 'दो-शब्द' का भेद प्राप्त किया। अविनाशी मुनि ने श्रीचन्द को शरीर पर लंगोट पहनकर नदी किनारे बैठकर तप करने का आदेश दिया। श्रीचन्द ने हर तरह के कर्मकांड किए। श्रीचन्द की गद्दी भारत की एक मशहूर गद्दी हुई है। श्रीचन्द 'दो-शब्द' का भेद देने लगा। उदासी मत के लोग श्रीचन्द को शंकर का अवतार मानते हैं।

गुरु नानकदेव जी ने भाई लैहणां को 'नामदान' दिया। भजन-सिमरन में कामयाब होने पर गुरु नानकदेव जी ने भाई लैहणां को अपना उत्तराधिकारी बना दिया। पूर्ण गुरु जानते हैं कि क्या होने वाला है? गुरु नानकदेव जी जानते थे कि उनके चोला छोड़ने के बाद उनके बेटे श्रीचन्द और लक्ष्मीदास भाई लैहणां को सम्मान नहीं देंगे क्योंकि परिवार और आस-पास के लोग भाई लैहणां को गुरु नानकदेव जी के घर का नौकर ही समझते थे।

गुरु नानकदेव जी ने चोला छोड़ने से कुछ महीने पहले ही भाई लैहणां को अपने से दूर जाने के लिए कह दिया ताकि उनके बेटे भाई लैहणां को

तंग न करें। भाई लैहणां ने अपने गाँव जाकर अपने आपको एक कमरे में बंद करके भजन करना शुरू कर दिया और अपने आपको अंदर से गुरु नानकदेव जी के साथ जोड़ लिया।

जब गुरु नानकदेव जी ने अपनी सांसारिक यात्रा पूर्ण कर ली, अपना शरीर छोड़ दिया तब भी उनके बेटे उनके पास नहीं आए और उनकी अर्थी को कंधा नहीं दिया। उनके बेटे उनसे इसलिए नाराज थे कि गुरु नानकदेव जी ने उन्हें गद्दी नहीं दी थी। श्रीचन्द और लक्ष्मीदास कहते कि भाई लैहणां हमारे घर का नौकर है, हम इसे अपना गुरु कैसे मान लें?

भाई लैहणां गुरु नानकदेव जी के उत्तराधिकारी बन गए लेकिन गुरु नानकदेव जी के बेटों ने उन्हें सच्चे गुरु के रूप में स्वीकार नहीं किया। श्रीचन्द ने गुरु नानकदेव जी के पंथ के समान्तर ही पंथ शुरू कर दिया और 'दो-शब्द' का भेद देने लगा। युगों-युगों से ही चला आ रहा है कि कुछ लोग पूर्ण गुरु के उत्तराधिकारी को मानते हैं और कुछ नहीं मानते। जिनके भाग्य में लिखा होता है, वे ही पूर्ण गुरु के उत्तराधिकारी के पास पहुँचते हैं।

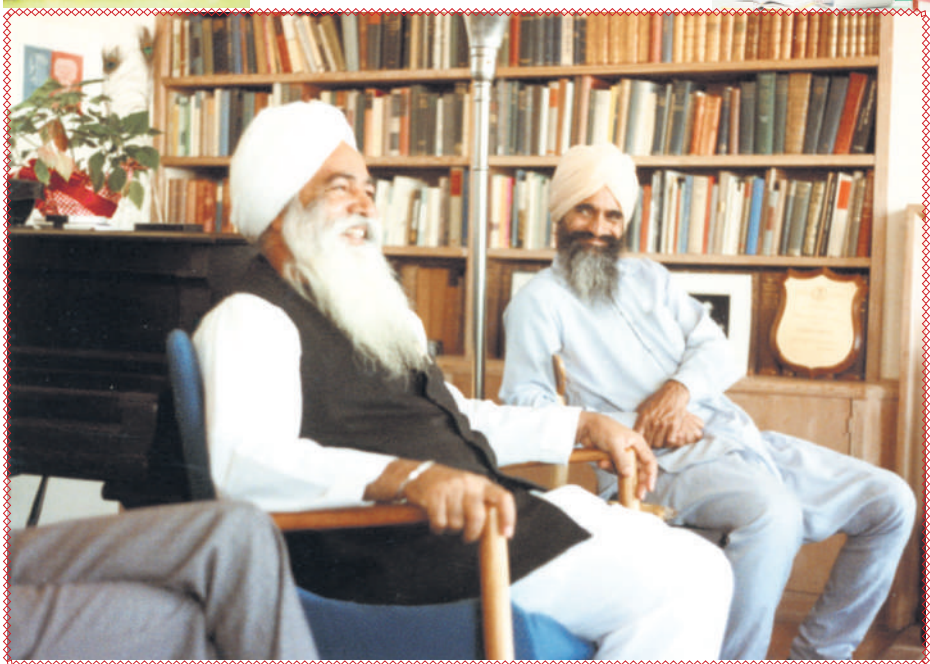
श्रीचन्द ने लम्बा जीवन बिताया। जब वह गुरु रामदास जी से मिला तो उसने उनसे कहा, "आपने इतनी लम्बी दाढ़ी क्यों बढ़ाई है?" गुरु रामदास जी ने कहा, "यह दाढ़ी आप जैसे महापुरुषों के चरण साफ करने के लिए बढ़ाई है।" गुरु रामदास जी का नम्रता भरा जवाब सुनकर श्रीचन्द रो पड़ा और कहने लगा, "आपकी इसी नम्रता के कारण हमें गद्दी नहीं मिली, हमारे पास कुछ नहीं बचा।"

बाबा अमोलकदास बहुत अच्छे साधु थे। उन्होंने करीब एक सौ चालीस साल का जीवन बिताया। बाबा अमोलकदास ने बिशनदास और पटियाला के राजा भूपेन्द्र सिंह को ही 'नामदान' दिया। मैं जब बिशनदास जी के चरणों में पहुँचा उस समय अमोलकदास जी चोले में थे।





किड्स कॉर्नर पवित्रता का महत्व



मैं कहा करता हूँ कि आप पवित्र जिंदगी जी कर देखें, इसका आनन्द और सुख महसूस करके देखें। अगर कोई आपको करोड़ों रुपए देकर यह कहे कि आप इस बुराई की तरफ आ जाएं तो आप इस तरफ जाने के लिए तो क्या इस तरफ देखने के लिए भी तैयार नहीं होंगे।

अगर बारिश होती है या बर्फ गिरती है तो आसपास से गुजरने वाली हवा ठंडी होती है। इसी तरह अगर आपकी जिंदगी पवित्र है, गुरु को तो उसका पता ही है क्योंकि गुरु तो अंदर ही बैठे हैं। आपके अड़ोस-पड़ोस में जितने आदमी रहते हैं, उनको भी आपकी पवित्रता की झलक मिलेगी कि यह पवित्र आदमी या पवित्र औरत है।



हमारी आर्मी में पहरेदारों की सुस्ती की वजह से कोई आदमी राईफल चुराकर ले गया। आर्मी के कानून बहुत सख्त होते हैं। लोगों को बहुत सज़ा मिलने लगी, हर एक के लिए बहुत मुश्किल आ रही थी। उस वक्त आर्मी में मुझे आमतौर पर सारे लोग 'भाई जी' या 'ज्ञानी जी' कहा करते थे।

एक दिन हमारे कमांडर अफसर ने कहा, "अगर आप सच्चे हैं तो इनके शरीर को हाथ लगाकर चले जाओ।" यह एक सच्चाई है कि पंद्रह सौ आदमी मेरे शरीर को हाथ लगाकर आगे बढ़ गए लेकिन जिन चार आदमियों ने यह गुनाह किया था, वे फौरन मान गए। मेरे नज़दीक आते ही उन्हें डर लगना शुरू हो गया कि पता नहीं इन्हें हाथ लगा देंगे तो क्या हो जाएगा? उन लोगों ने कहा, "हाँ जी, हमने ही यह गुनाह किया है।" क्या इन्सानों को पता नहीं चलता कि यह पवित्र है या नहीं? क्या मैंने उन अफसरों से कहा था कि मेरे अंदर यह पवित्रता है?

मैं बताया करता हूँ कि मैं कभी शहर में नहीं गया था अगर कोई चीज़ मँगवानी होती तो अपने दोस्त से मँगवा लेता था। मैं धर्मस्थानों में जाता था। आप मीट-शराब न खाएं-पिएं तो क्या आपके अड़ोस-पड़ोस वाले लोग नहीं जानते होंगे? वे ज़रूर जानते होंगे। आपके दोस्त जो पहले आपकी निन्दा करते थे, वही दोस्त बाद में लोगों के पास आपकी तारीफ भी करने लग जाएंगे।

मैं कहा करता हूँ कि हम जिस धरती पर बैठे हैं, हम जिस मकान में रहते हैं कम से कम उसे हमारे ऊपर मान होना चाहिए कि मेरे अंदर कितना पवित्र आदमी रह रहा है।

आपके गुरु निर्मल और पवित्र हैं, वे दुनिया की मैलों से ऊपर उठे हुए हैं। उनको आपकी निर्मलता और पवित्रता प्यारी है। क्यों न आप अपने ख्यालों को पवित्र रखें ताकि आपके गुरु आपके अंदर प्रकट हो सकें और आपके अंदर बैठकर मान कर सकें कि मेरे शिष्य पवित्र हैं। ***

आओ बच्चो, आज हम बाबा जी के बचपन की कुछ बातें जानें

- बाबा जी के माता पिता ने बाबा जी का नाम प्यार से 'सरदारा सिंह' रखा था। बाबा बिशन दास जी ने उन्हें नाम दिया था 'अजायब सिंह' जिसका मतलब होता है 'सोहणा शेर'
- बाबा जी की माता हर साल बाबा जी का जन्मदिन बहुत धूम-धाम से मनातीं थीं और पूरे गांव वालों को बुलाकर भोजन करवाती थीं।
- बाबा जी के दिल में सच्चाई की खोज और तड़प का जज़्बा परमात्मा ने उसी वक़्त भर दिया था, जब उनके दिल की मिट्टी तैयार हो रही थी। पांच साल की छोटी सी उम्र में ही उनके अंदर परमात्मा से मिलने और सच्चाई को जानने की तड़प थी।
- जिस तरह बच्चे गुड्डे-गुड़ियां से खेलते हैं उसी तरह बाबा जी ने अपने घरवालों से छिप कर एक पुराने कपड़ों का पुतला बनाया था जिसे वे भगवान समझकर पूजा करते थे और रेवड़ियों का प्रसाद उनके सामने रखकर प्रार्थना करते थे कि आप इस प्रसाद को भोग लगाएं। इस बात का पता चलने पर सब लोग बाबा जी पर बहुत हंसते थे और पूछते थे, "क्या तेरे भगवान ने भोग लगाया?"
- बाबा जी अपने माता-पिता के अच्छे प्रभाव के कारण कभी बुरी चीज़ों की तरफ आकर्षित नहीं हुए और हमेशा मजबूत बने रहे।
- बाबा जी के अंदर बचपन से ही दयालुता, सेवा-भाव, सच्चाई और माफी की भावना थी।
- बाबा जी ने बचपन से ही अंधविश्वास, जाति-पाति और छुआछूत का विरोध किया था।
- बाबा जी हमेशा अनुशासन में रहे, उनके अंदर कोई शरारत बाजी, बाजारों में जाना और सिनेमा देखना जैसी आदतें बिल्कुल नहीं थी। ***



परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज, 11 सितम्बर 1926



सच्चे पातशाह महाराज कृपाल कहा करते थे, “भूखे को रोटी प्यासे को पानी कुदरत का उसूल है, जरूर देती है।” अगर हम फुल्के के लिए पुकार करते हैं तो परमात्मा जरूर इंतजाम करते हैं अगर हम गुरु से मिलने के लिए पुकार करें तो वे हमारी पुकार जरूर सुनते हैं।